आमुख

शोध की तमाम पद्धतियों में तुलनात्मक शोध एक अन्यतम पद्धति है। कार्य-क्षेत्र की दृष्टि से यह अत्यंत व्यापक पद्धति है। तुलनात्मक शोध में किन्हीं दो रचनाओं, लेखकों, काव्यांदोलनों, प्रवृत्तियों या किन्हीं अन्य साहित्यिक पक्षों को लेकर किन्हीं दो भाषाओं के स्तर पर शोध किया जाता है। एक भाषा से दूसरी भाषा के साहित्य में एकरूपता, साम्य और वैषम्य का निरूपण करना ही तुलनात्मक पद्धति का प्रमुख उद्देश्य है। वर्तमान समय में शोधार्थी की बढ़ती संख्या तथा शोध के लिए विषय चयन की समस्या, इन दोनों की मांग को पूरा करते हुए तुलनात्मक शोध पद्धति में नये-नये विषयों पर शोध कार्य किये जा रहे हैं।

भारतीय साहित्य में भक्ति और शृंगार विषयक काव्य की लम्बी परम्परा रही है। इसी परम्परा में हिन्दी साहित्य के विद्यापति और असमीया साहित्य के शंकरदेव की रचनाएँ भी आती हैं। विद्यापति और शंकरदेव दोनों की कीर्ति का मूलाधार क्रमशः 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' हैं। विद्यापति की 'पदावली' शृंगार रस से सराबोर है, साथ ही उसमें भक्ति विषयक अनेक पद मिलते हैं। इसी तरह शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' में उनकी अनन्य भक्ति का परिचय तो मिलता ही है, साथ ही शृंगार का चित्रण भी कुछ खण्डों में मिलता है। अलग-अलग भाषा तथा प्रांत के होने पर भी इन दोनों ही रचनाकारों की रचनाओं में भक्ति और शृंगार का चित्रण मिलता है। लेकिन वर्तमान समय तक विद्यापति की 'पदावली' और शंकरदेव की 'कीर्तन-घोषा' की भक्ति तथा शृंगार का तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है। इसलिए इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता को अनुभव करते हुए, एम.फिल. हिन्दी में लघु शोध-प्रबंध हेतु मैंने 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति तथा शृंगार भावनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुविधा के लिए छह अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय है 'प्रस्तावना' । इस अध्याय में शोध-आलेख की भूमिका, महत्त्व, उद्देश्य, शोध की व्यवहृत प्रणाली आदि पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय है 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व'। इस अध्याय में विद्यापति और शंकरदेव के जीवन का संक्षिप्त परिचय देकर उनकी साहित्यिक प्रतिभा पर चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय है 'पदावली और कीर्तन-घोषा एक विवेचन'। इस अध्याय में विषय-वस्तु और शिल्प की दृष्टि से दोनों ही

रचनाओं का अध्ययन विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय है 'भक्ति का स्वरूप और 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित भक्ति भावना'। इस अध्याय में भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए आलोच्य दोनों ही रचनाओं में चित्रित भक्ति भावना का अध्ययन विवेचन करके उनकी तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। पंचम अध्याय है 'शृंगार का स्वरूप तथा 'पदावली' और 'कीर्तन-घोषा' में चित्रित शृंगार भावना'। इस अध्याय में शृंगार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए आलोच्य दोनों ही रचनाओं में चित्रित शृंगार भावना का अध्ययन विश्लेषण करके उनका तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अंतिम तथा षष्ठ अध्याय है 'स्थापना एवं निष्कर्ष'। इसमें पूरे विषय के मूल बिन्दुओं को रखा गया है। उसके बाद ग्रंथ सूची रखी गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में मेरी शोध निर्देशिका गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष तथा मेरी पूजनीय गुरु डॉ. रीतामणि वैश्य जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस दौरान उन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय देने के साथ अपनी ज्ञानराशि का भी विनिमय किया। उनके निर्देशना के अभाव में यह एक दुष्कर कार्य होता। अतः इस शोध के लिए आजीवन मैं अपनी गुरु तथा मार्गदर्शक डॉ. रीतामणि वैश्य जी का ऋणी रहूँगी।

इस अवसर पर मैं अपने पूज्य माता-पिता, मेरे पति तथा परिवारजनों का भी आभार व्यक्त करती हूँ। उनकी प्रेरणा और सहयोग के बिना यह कार्य मेरे लिए असंभव था।

इसके अलावा जिन ज्ञात-अज्ञातों का मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है आप सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए, विनम्रतापूर्वक अपना लघु शोध-प्रबंध मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

बर्णाली बैश्य

(बर्णाली वैश्य)

शोधार्थी

हिन्दी विभाग

गौहाटी विश्वविद्यालय